# भोपाल शहर के कक्षा 6 वीं के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा संबंधी त्रुटियों का उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति के संदर्भ में अध्ययन

सुनीता चोकसे
सहायक व्याख्याता
जकिर हुसैन कॉलेज ऑफ एजूकेशन, बुरहानपुर
Sunita1986@gmail.com

## प्रस्तावना

वर्तमान समय में शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य प्रांरम्भिक शिक्षा के सर्वव्यापीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करना हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इस दिशा में काफी अध्ययन व प्रयत्न करने पर भी हम अभी तक इस लक्ष्य को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर पाये हैं। अभी हमारे प्रयासों से आंशिक सफलता ही प्राप्त हो सकी है, जब हम सर्वव्यापीकरण की बात करते है, तो उसका आशय है 6 से 14 वर्ष के बच्चों को कक्षा में प्रवेश। इसमें प्रवेश में तो सुधार हुआ है किन्तु धारिता व उपलब्धि संतोषजनक नहीं है। अधिकांशतः यह देखा गया है कि बच्चे भाषा संबंधी दक्षताओं को उतना नही सीख पाते जितना उन्हे सीखना चाहिए। उनके सीखने के स्तर को किस प्रकार ऊपर उठाया जाये। यह चिन्ता न केवल उन बच्चों को या उनके माता–पिता को है वरन् भाषा शिक्षकों को भी है, जो इस दिशा में निरन्तर चिन्तनशील रहते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) संशोधित (1992) में न्यूनतम् अधिकतम स्तरों पर बल दिया गया था। हाल के 3 वर्षों में प्राथमिक स्तर के सभी विद्यार्थियों की उपलब्धि की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए शैक्षिक नीति निर्माताओं और व्यवहारकर्ताओं का ध्यान गया है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में यह सिफारिश की गई है कि विद्यालय शिक्षा के प्रत्येक स्तर के लिये अधिगम के भी न्यूनतम स्तर निर्धारित किये जाये। साथ ही यह सुनिश्चित करने के उपाय किये जाये कि विद्यार्थी इन स्तरों को प्राप्त कर सकें। सभी विद्यार्थियों के न्यूनतम अधिगम स्तर सुनिश्चित करने की तत्काल आवश्यकता पर

संशोधित (POA 1992) में पुनः बल दिया गया।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली पुनर्रचना के दौर में है उसका उद्देश्य मात्र कक्षा उन्नति रह गया है। कक्षा की शैक्षिक सामग्री को आत्मसात् करना नहीं है। यह तथ्य प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रूप से और भी देखने को मिलता है क्योंकि प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् भी छात्र में पढ़ने, लिखने तथा गणना की मूलभूत योग्यताओं का विकास नहीं हो पाता है। जो छात्र की भावी शैक्षिक प्रगति में भी बाधक होता है। शिक्षा के इस दुर्बलतम पक्ष को मजबूत करने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति में काफी बल दिया गया है।

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के उपलब्धि का स्तर सामान्यतः पूरे प्रदेश में कम है। किसी भी विद्यालय को इन स्तरों के नीचे जाने की अनुमति नहीं है। हमारे अधिकांश विद्यार्थियों की उपलब्धि क्या है? और क्या होनी चाहिए? इसके बीच हमेशा ही अंतर रहा है। भरपूर समय तक प्रयासों के बावजूद हमारे विद्यालय सभी विद्यार्थियों के अधिगम स्तर बढ़ाने के लक्ष्य की ओर सामान्यतः नही बढ़ पाये है। बच्चे के घर के निकट ही प्राथमिक विद्यालयों एवं अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र की व्यवस्था करने के संबंध में पर्याप्त प्रगति हुई है और साथ ही प्रवेश लेने वाले बच्चों की संख्या में भी वृद्धि हुई है, लेकिन न केवल विद्यार्थियों की उपलब्धि के स्तर नीचे रहे है। उपलब्धि स्तर और उपलब्धि में अंतर विभिन्न विद्यालयों में भिन्न–भिन्न है। इससे यह स्पष्ट हो गया है कि मात्र आधारभूत सुविधाओं से बात नहीं बन सकती है। महत्वपूर्ण बात यह है कि मात्र सीखने के विभिन्न कौशल निर्धारित किये जाये और यह सुनिश्चित किया जाये कि सभी विद्यार्थी उन्हें समान रूप से प्राप्त कर सके। इससे समानता सहित गुणवत्ता का विचार सामने आयेगा। जिसका अर्थ है कि प्रत्येक बच्चे को संतोषजनक गुणवत्ता की शिक्षा सुलभ हो रही है।

कुछ अध्ययनों से यह पता चला है कि प्राथमिता विद्यालयों के अधिकांश बच्चों की विभिन्न विषयों में उपलब्धि बहुत कम है। उदाहरण के लिये भाषा के क्षेत्र में यह देखा गया है कि कक्षा छठी में अध्ययनरत विद्यार्थी पाठ को न तो ठीक से पढ़ पाते है और नही पढ़े हुए पाठ को समझ पाते हैं। हमारे प्रारम्भिक स्तर के विद्यार्थियों की इस न्यूनतम उपलब्धियों से माता–पिता, शैक्षिक प्रशासक योजना निर्माता और समाज के ज्ञानी सदस्य चिंतित है।

वर्तमान पाठ्यक्रम को देखते हुए ऐसा लगता है कि कक्षा में केवल उन्ही बच्चों की उपलब्धि संतोषजनक हो पायेगी जिनमें भाषा की दक्षता का सही विकास हो पाया है। बच्चों की शिक्षा में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले सभी विषय भाषा के माध्यम से ही सीखे जाते हैं। भाषा के आधारभूत कौशलों में सुनना, बोलना, पढ़ना लिखना अत्यधिक महत्व के हैं तथा बच्चों की पूरी शिक्षा को प्रभावित करते हैं। उनमें ये कौशल जितनी जल्दी विकसित होते हैं, वे उतनी ही जल्दी व सरलता से दूसरे विषयों को सीखते है। भाषा शिक्षण का उद्देश्य शिक्षार्थी की भाषा संबंधी कठिनाईयों को अतिशीघ्र दूर कर उन्हें इस योग्य बनाये कि वे भाषा संबंधी दक्षताओं को सरलता से प्राप्त कर सकें और उनका अधिगम का स्तर संतोषजनक हो सके।

बेबर और मिलर (1970) ने मौखिक वाचन में होने वाली त्रुटियों का अध्ययन नामक विषय में शोध किया। इस अध्ययन का निष्कर्ष निकला कि मौखिक पठन में होने वाली त्रुटियों में मुख्य आवश्यक तीन स्तर है–

1. किसी अज्ञात शब्द के लिए अपनी तरफ से शब्द बदलना।
2. पढ़ते समय संदर्भ के अनुसार शब्द बदलना।
3. शब्द को छोड़कर आगे बढ़ना आदि है।

अग्रवाल (1981) ने संज्ञानात्मक और असंज्ञानात्मक कारकों के संबंध में पठन योग्यता का अध्ययन किया।

**शोध के उद्देश्य**

- उर्दू मातृभाषा वाले छात्रों का हिन्दी भाषा से संबंधित त्रुटियों का अध्ययन।

**परिकल्पना** :

**परिकल्पना : 1** उर्दू भाषी अशिक्षित पालकों के छात्र–छात्राओं में हिन्दी वर्तनी में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**परिकल्पना : 2** मैट्रिक शिक्षा प्राप्त शिक्षित पालकों की छात्र छात्राओ की हिन्दी वर्तनी त्रुटियों में सार्थक अंतर नही है।

**विधिः**—प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि से किया गया है। शोध कार्य के लिए तीन प्रकार की प्रश्नावली के माध्यम से छात्रों का परीक्षण करके आकड़ों का संकलन किया गया है।

**न्यादर्श** —प्रस्तुत अध्ययन में भोपाल शहर के दो विद्यालयों का चयन किया गया। इन विद्यालयों से यादृच्छिक विधि द्वारा कक्षा—6 के कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 50 छात्र तथा 50 बालिकाएँ है।

**उपकरण**

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में शोधकर्ता ने उपकरण के रूप में शोध के लिए वर्तनियों की अशुद्धियाँ जानने के लिए शोध में चार चरणों का उपयोग किया गया।

शोध के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्रदत्तों का संकलन किया गया। प्रदत्त संकलन हेतु भोपाल शहर के विद्यालयों के कक्षा 6 वीं के छात्रों एवं छात्राओं को शामिल किया गया है। शोधकर्ता ने सर्वप्रथम शाला में जाकर संस्था के प्रधान को लघु विषय की जानकारी की एवं पूर्ण सहयोग हेतु अनुरोध किया। समस्त अध्यापक एवं अध्यापिकाओं ने तथा शिक्षार्थियों ने इस कार्य के लिए सम्पूर्ण सहयोग दिया

शोधकर्ता ने प्रत्येक विद्यालय में अलग—अलग निर्धारित तिथि समय पर शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की सहायता से कक्षा 6 वीं विद्यार्थियों की प्रश्न पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर आवश्यक जानकारियों को भरना, विद्यालय का नाम, विद्यार्थियों का नाम, माता की शिक्षा, पिता की शिक्षा, पिता की मासिक आय तत्पश्चात् विद्यार्थियों का प्रश्न पत्र से संबंधित जानकारी दी जैसे सभी प्रश्न हल करना है एवं निर्धारित समय सीमा 40 मिनट का है। निर्धारित समय सीमा समाप्त होने पर विद्यार्थियों से उत्तर पुस्तिकाएं वापिस ले ली गई।

**परिकल्पना 1 : उर्दू भाषी अशिक्षित पालकों के छात्र–छात्राओं में हिन्दी वर्तनी की त्रुटियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।**

इस अध्ययन में उर्दू भाषी छात्रों की हिन्दी भाषा की वर्तनी की अशुद्धियों का अध्ययन किया गया है।

**सारणी क्रमांक 1**

**उर्दू भाषी अशिक्षित पालकों के छात्र–छात्राओं में हिन्दी वर्तनी की त्रुटियों में सार्थक अंतर नहीं है ।**

| चर | नम्बर | माध्य | विचलन | टी | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 16 | 34.00 | 8.2 | 1.27 | सार्थक अंतर है। |
| छात्रा | 20 | 38.85 | 12.99 | | |

**सार्थक अंतर 0.01स्तर पर**

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अशिक्षित पालक वाले विद्यार्थियों का हिन्दी वर्तनी की उपलब्धि में छात्र नम्बर 16 माध्य 34 विचलन 8.2 और छात्राओं का नम्बर 20, माध्य 38.85, विचलन 12.99 का टी मान ज्ञात करने पर t = 1. 27 है। जो कि सार्थक मान से अधिक है। इससे ज्ञात होता है कि छात्र और छात्राओं में सार्थक अंतर है। संभवतः इसका कारण यह हो सकता है कि अहिन्दी भाषी है और उर्दू भाषी हिन्दी वर्तनी के संबंध में बहुत कमजोर होते हैं। परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

**उर्दू भाषी अशिक्षित पालको के छात्र–छात्राओं में हिन्दी वर्तनी की त्रुटियों में सार्थक**

अंतर का ग्रफ।

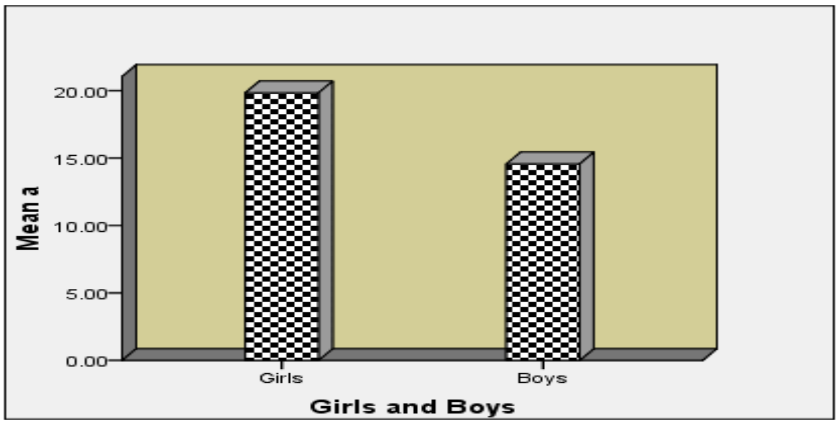


परिकल्पना 2 : मैट्रिक शिक्षा प्राप्त शिक्षित पालको के छात्र–छात्राओं में हिन्दी वर्तनी में सार्थक अंतर नही है।

सारणी क्रमांक 2

मैट्रिक शिक्षित पिता की शिक्षा के आधार पर हिन्दी वर्तनी का टी का मान।

| चर | नम्बर | माध्य | विचलन | टी | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 4 | 49 | 20.9 | 0.58 | सार्थक अंतर नहीं है। |
| छात्रा | 9 | 53.3 | 7.25 | | |

सार्थक अंतर 0.01 स्तर पर नही है

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त पिता के छात्र और छात्रायें का टी का मान ज्ञात करने पर छात्र नम्बर 4 माध्य 49 विचलन 20.69 तथा छात्रायें नम्बर 9 माध्य 53.3 विचलन 7. 25 का टी का मान 0.58 है। जो सार्थक मान से कम है अतः छात्रों और छात्रायें में हिन्दी की वर्तनी की त्रुटियों में कोई सार्थक अन्तर नही है छात्र और छात्रायें में हिन्दी वर्तनी की अशुद्धियॉ एक सी होती है। संभवतः इसका कारण

है कि छात्रायें की हिन्दी भाषा सीखने के प्रति कम रूचि है। और घर में भी छात्र की अपेक्षा छात्रायें को घर के कामों में हाथ बटाना पड़ता है। अतः परिकल्पना क्रमांक 2 स्वीकृत की जाती है।

**निष्कर्ष : शोध से प्राप्त निष्कर्ष**

वर्तमान शोध के अन्तर्गत जिन भाषा के कौशलों को शामिल किया गया है। उन्हें शोधकर्ता द्वारा मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है। इस शोध कार्य में माध्यमिक स्तर के हिन्दी भाषा के वाचन एवं अर्थग्रहण की क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया है। तथ्यों का विश्लेषण ज्ञात करने से ज्ञात होता है कि उर्दू मातृभाषा के अशिक्षित पालकों के छात्र छात्रायें में हिन्दी भाषा कि त्रुटियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इस प्रकार जब हम मैट्रिक तक प्राप्त शिक्षा उर्दू मातृ भाषा भाषी के पालकों के छात्रों में हिन्दी वर्तनी की त्रुटियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है निष्कर्ष में हम कह सकते है कि दोनों हिन्दी और उर्दू मातृ भाषा वाले हिन्दी वर्तनी की त्रुटियों में अत्यधिक त्रुटियाँ होती है।

**शोध कार्य के पश्चात् शोधकर्ता द्वारा प्राप्त निष्कर्षो का सुझाव**

- हिन्दी भाषा के वाचन एवं अर्थग्रहण की क्षमता में जो त्रुटियाँ विद्यार्थियों द्वारा की गई है उनका उपचार किया जाना चाहिए। शिक्षकों को चाहिए कि हिन्दी विषय पढ़ाते समय प्राथमिक स्तर पर अक्षरों का सही उच्चारण करे तथा हिन्दी विषय पढ़ाते समय शब्दों का सही उच्चारण करें। अक्षर व शब्द स्पष्ट लिखे, बच्चों के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाये।
- हिन्दी भाषा की विषय–वस्तु पढ़ाते समय कक्षा में पर्याप्त सहायक सामग्री का उपयोग करना चाहिए।
- शिक्षा के लोकव्यापीकरण करने के लिए भाषा सशक्त भूमिका निभाती है। अतः छात्र के वाचन के साथ–साथ पठन, लेखन कौशल का विकास भी अनिवार्य है तभी भाषा अधिगम की समस्याओं को दूर किया जा सकता है।

- ऐसे क्रियाकलापों का आयोजन करे जिससे कि छात्र अपनी वाचन की त्रुटियों स्वयं दूर करने का प्रयास कर सकें।
- कक्षाओं में विद्यार्थियों के लिये समय–समय पर वाद–विवाद, भाषण कहानी, नाटक, विचार–अभिव्यक्ति जैसी विधियों का आयोजन अवश्य करना चाहिए।
- हिन्दी शिक्षक/शिक्षिका को समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- अशिक्षित एवं निम्न परिवार वाले छात्रों की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए क्योंकि इन परिवार में भी प्रतिभा जन्म लेती है।
- प्रस्तुत शोध कार्य भोपाल शहर के कक्षा छटवीं तक के विद्यार्थियों तक ही सीमित था। यह अध्ययन अन्य नगरों में भी हो सकता है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**


- कपिल, एच. के. 1995. सांख्यकी के मूल तत्व आगरा : विनोद प्रकाशन मंदिर
- अग्निहोत्री, सुषमा 1982 ''हिन्दी वर्तनीगत अशुद्धियाँ राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका
- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू एवं खान जेम्स वी 2002, रिसर्च इन एजयूकेशन, नई दिल्लीः प्रिन्टिस हॉल
- भटनागर, सुरेश 2000 शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ लायल बुक डिपो
- माथुर, एस.एस. 2002, शिक्षा मनोविज्ञान आगरा : विनोद प्रकाशन मंदिर